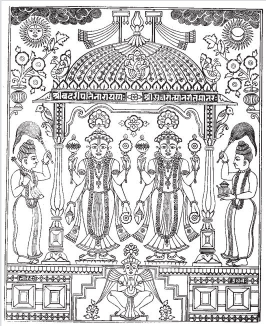

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युझियम
नारणपुरा, अहमदाबाद-३८००१३.
फोन : २७४८९५९७ ● फेक्स : २७४१९५९७
९८७९५ ४९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य

प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ६ | अंक : ६८ | डिसेम्बर-२०१२

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०२

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०३

०३. माघस्नान ०४

०४. सर्वोपरि स्वामिनारायण भगवान ०६

०५. प.पू. बड़े महाराजश्री की अमृतवाणी (सीडनी न्युजीलेन्ड) ०८

०६. मूली देश की प्रथम तथा अहमदाबाद देश की चौथी बाल सत्संग शिबिर १०

०७. श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से १२

०७. सत्संग बालवाटिका १४

०८. भक्ति सुधा १६

०९. सत्संग समाचार १९

॥ अस्मदीयम् ॥

सुन्दर शीतकालीन ऋतु प्रारंभ हो गयी है। खेतो में चारो तरफ हरियाली ही हरियाली दिखाई देती है। दीपावली अवकाश भी पूर्ण हो चुका है। विद्यार्थी परीक्षा की तैयारी में लग गये हैं। बोर्ड की परीक्षा खूब प्रयत्न पूर्वक तैयारी करके देनी पडेगी। जीवन में प्रत्येक को प्रगति करनी हो तो उच्चशिक्षण प्राप्त करना आवश्यक है। अच्छी शिक्षा प्राप्त होगी तो अच्छी प्रतिष्ठा मिलेगी, अच्छा स्थान मिलेगा, अच्छा व्यापार कर सकेंगे। इस लिये प्रत्येक विद्यार्थी को सूचना है कि अभ्यास में खूब ध्यान दीजियेगा। आज के विकसित टेकनिकल युग में शिक्षण की बहुत आवश्यकता है . अपना देश भले खेती प्रधान हो, लेकिन अब आज के जमाने में ऐसा नहीं है कि अपने पूर्वजों द्वारा उपार्जित जमीन-जागीर बहुत अधिक हो, जो है उसमें से कितने भाग हो गये, जमीन टुकडों में विभक्त हो गयी। आपके भाग में क्या आयेगा ? इसलिये विद्यार्थियों को चाहिये शिक्षण में खूब ध्यान देकर अध्ययन करे।

धनुर्मास का प्रारंभ १६ दिसम्बर से हो रहा है। पूरे महीने भगवान की भजन करने का यह मास है।

अपने छोटे-बड़े प्रत्येक हरिभक्त श्री स्वामिनारायण मंदिरमें प्रातः ५-०० बजे से धुन-भजन-कथा में अवश्य आवे। श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में तथा धर्मवंशी प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बडे महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में प्रसादी की सभा मंडप में, पूजनीय संत-हरिभक्तों की उपस्थिति में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून पूरे मास की जायेगी। अहमदाबाद शहर में रहने वाले हरिभक्त धनुर्मास में धुन का लाभ लेकर जीवन को कृतार्थ करें।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(नवम्बर-२०१२)

९. प.भ. ओधवजीभाई पटेल की तरफ से आयोजित महामंत्र धुन प्रसंग पर पदार्पण - उमिया केम्पस, सोला।

११. श्री स्वामिनारायण मंदिर ईश्वरपुरा (बदपुरा) कथा प्रसंग पर पदार्पण।

१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर जीरागढ (हालार मूली देश) श्री रोकडिया दादा के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया मारुति यज्ञ प्रसंग पर पदार्पण।

१३. श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद शारदा पूजन स्व वरद् हाथों से संपन्न किये।

१४. संवत २०६९ नूतन वर्ष श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती तथा अन्नकूट की आरती उतारने स्वयं पधारे।

१५. प.भ. वसंतभाई त्रिभोवनदास टांकके यहाँ पदार्पण, पालडी।
प.भ. संजयभाई आर. सोनी के यहाँ पदार्पण, बोपल।

१६. देउसणा गाँव में जीवनचर्या प्रसंग पर आयोजित कथा में पदार्पण।

१७. श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा पदार्पण।

१७. से १८. तक (कच्छ) गाँव में पदार्पण।

१९ से २१. मानकुवा (कच्छ) श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

२३. कनुभाई शांतिलाल के यहाँ पदार्पण, वासणा। कुंडाल (कड़ी) गाँव में कथा प्रसंग पर पदार्पण।

२४. संत महादीक्षा विधिअपने वरद् हाथों से सम्पन्न किये श्री स्वामिनारायण मंदिर, अमदावाद।
सायंकाल कोडकी (कच्छ) पदार्पण।

२६. से ११ दिसम्बर तक अमेरिका धर्मयात्रा प्रसंग पर पदार्पण।

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(नवम्बर-२०१२)

१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद श्री हनुमानजी का पूजन-अर्चन आरती अपने वरद् हाथों से संपन्न किये।

१४. नूतन वर्ष श्री नरनारायणदेव के अन्नकूट की आरती उतारने पधारे।
श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा अन्नकूट की आरती उतारने पधारे।

२०-२१. श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली बाल सत्संग शिबिर अपने अध्यक्ष स्थान पर धूमधाम से सम्पन्न किये।

२५. कुंडाल (कडी) गाँव में कथा प्रसंग पर पदार्पण।

माघस्नान

साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास
(जेतलपुर धाम)

भगवान वेद व्यास द्वारा रचित पद्मपुराण में माघस्नान की विधितथा महिमा का खूब वर्णन है । महासती पार्वतीने भगवान शिव से सभी पापों के प्रायश्चित्त के विषय में पूछा । भगवान शिव ने प्रायश्चित्त निवारण के लिये माघस्नान को सबसे बड़ा प्रायश्चित्त बताया । उत्तर के देशों में पौष शुक्ल एकादशी से माघशुक्ल एकादशी तक तथा गुजरात में सूर्यदेव मकर राशी में जब परिभ्रमण करते हैं उस समय उत्तरायण रहता है जिस में माघस्नान करने का विशेष महत्व बताया गया है । गंगा संगम में तथा अन्य नदियों में करोडो लोग माघस्नान करते हैं । प्रयाग में प्रतिवर्ष एक महीने तक माघमेला लगता है । जिस में भक्तज देश-विदेश स्नान करने के लिये आते हैं । दान के विना सभी फल की ईच्छा रखने वाले माघस्नान करते हैं । वैशाख की पूजा, कार्तिक में तप तथा हवन करने वालों की अपेक्षा माघस्नान श्रेष्ठ है । तपस्वियों को वन में तथा विष्णु भक्त को वैकुंठ में जो फल मिता है वह फल माघस्नान से मिलता है । जो व्यक्ति माघस्नान करके तिल, गाय या भोजन का दान करता है उसके सात पीढी के पूर्वज वैकुंठ में जाते है । तन-मन के पापों का नाश करने वाला तथा सभी पापों का एक मात्र प्रायश्चित माघस्नान सभी का राजा कहा गया है । मकर के सूर्य में स्नान करने से अमूल्य आरोग्य, सम्पत्ति, रुप, सौभाग्य इत्यादि गुणों की प्राप्ति होती है । जिस तरह कामधेनु कामना तथा चिन्तामणी सभी प्रकार के इच्छित फलों को देने वाली है । सभी आश्रयों मे माघस्नान का उत्तम फल बताया गया है । माघस्नान का समय आते ही सभी प्रकार के पाप कांपने लगते है ।

सत्संगिजीवन के ४ थे प्रकरण १८ वें अध्याय में शुकानंद स्वामीने माघस्नान तथा निर्णय सिन्धु में यथार्थ विधिबताई गयी है । इसके विषय में बताया हूँ । तारा दर्शन के समय किया गया स्नान उत्तम । तारा दिखाई देना बन्द हो जाय उसके बाद वाला स्नान मध्यम । सूर्योदय के बाद का स्नान कनिष्ठ कहा गया है । गोविंद, माधव, नारायण इत्यादि नामों के उच्चारण के साथ स्नान करना चाहिये । स्नान करके गीले कपडे के साथ जो घर आता है उसके प्रत्येक पद में अश्वमेधयज्ञ का फल बताया गया है । जगत में जो भी पाप हुआ हों वह माघस्नान से नष्ट हो जाता है । हमारे आश्रित भक्तजन माघमास में नदी, तालाब, कूंआ, बावली अथवा घर में मिट्टी के घरजल से स्नान करना चाहिये । तिल के तेल को शरीर में लेपन करें । तिल का हवन करें । तिल से पितरों का तर्पण करें । तिल का दान तो अवश्य करना चाहिये ।

स्नान विधी : नदी-तालाब के अभाव में मिट्टी के नये घड़े में रात्रि के समय पानी भरकर रखें, लेकिन ऐसी जगह पर रखें कि वायु का स्पर्श हो, प्रातः ब्रह्ममुहुर्त में सूर्योदय से पूर्व भगवान का नाम मंत्र जप करते हुये स्नान करे । ऐसे जल में सभी तीर्थो वास होता

है। जो मनुष्य माघमास में घटधल से स्नान करता है उसे ६ वर्ष तक स्नानाका फल मिलता है। तालाब में स्नान करने से १२ वर्ष के स्नान का फल मिलता है। नदी मं स्नान करने से २४ वर्ष का फल मिसता है। देव स्थान तीर्थभूमि की नदी में स्नान करने से १०० वर्ष का फल मिलता है। जो व्यक्ति माघमास में गंगा सागर में स्नान करता है उसे ४० हजार वर्ष का फल मिलता है। जो गंगा-यमुना के संग (प्रयागराज) में एकबार भी स्नान करता है उसे पुनः गर्भवास की पीडा सहन नही करत पड़ती। पंचमहापाप करने वाला प्रयाग में माघमास में समय स्नान करने से परमपदकी प्राप्ति करता है। मकर के सूर्य में माघस्नान की महिमा तथा पुण्यकाल को यथार्थ रुप से ब्रह्मा भी वर्णन नहीं कर सकते। १०० वर्ष तक उपवास करने से जो फल मिलता वह प्रयाग में तीन दिनतक माघस्नान करने से मिलता है। सूर्यग्रहण के समय कुरुक्षेत्रमें एक हजार भार जितना सुवर्णदान का जो फल है वह प्रयाग में एकदिन के स्नान के फल जितना है। एक हजार राजसूययज्ञ के फल से भी अधिक फल माघस्नान से भस्मीभूत हो जाते है। माघमास में प्रयाग क्षेत्र में त्रिवेणी संगम में स्नान करने के लिये ब्रह्मादिक देव, रुद्र, माघतगण, आदित्य-सूर्य, गन्धर्व, लोकपाल, यक्ष, सिद्ध, तपस्वी, मां पार्वती, मां लक्ष्मी, दिति, अदिति, देव-पत्नी अनेकवार आते हैं। ऐसे देव स्नान करके अपने स्थान को स्थायी कर लेते हैं। माघमास में पुण्य स्थानों पर स्नान करने का योग पृथ्वी पर परम दुर्लभ है। स्नान के बाद तिल, सुवर्ण, वस्त्र इत्यादि का दान करने वाला देवलोक को प्राप्त करता है। ब्रह्मचर्य इत्यादि तप के द्वारा जिस तरह शुद्ध हुआ जाता है . उससे भी विशेष माघस्नान से शुद्ध हो जाता है। माघस्नान करके नारायण भगवान की पूजा करने वाला । देवलोक में राजा होता है। जिसतरह यज्ञकुंड में प्रक्षिप्त आहुति तत्काल भष्म हो जाती है। प्रयाग में स्नान करने से पुनः जन्म नहीं होता और यम यातना नहीं होती। पूर्व के सात पीढी के मातृपक्ष या पितृपक्ष के पितर लोग माघस्नान तीन वार करने से तर जाते हैं। माघस्नान तीन बार किया तो ऊर्ध्वगति मिलती है। माघस्नान के बाद तुरंत शरीर को पोंछना नही चाहिये। थोडी देर के बाद ही पोंछना चाहिये। क्योंकि स्नान करने से शरीर के ऊपर के जल का पान करके पितृलोग तृप्त होते हैं। नीचे के भाग का जल पान करके असुर तृप्त होते हैं। प्रयाग क्षेत्र के अलांवा अन्यत्र प्रदूषित नदी के जल स्नान करने की अपेक्षा घर में मिट्टी के घर जल से स्नान करना विशेष फल कारक है। सभी को यह ध्यान रखना चाहिये कि अधिक वृद्ध या अतिरोगी को माघस्नान की अपेक्षा शारीरिक स्थिति का विचार करना चाहिये।

अपने देश में कुंभ मेला का स्नान माघस्नानान्तर्गत किया जाता है।

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये

जेतलपुर : **www.jetalpurdarshan.com**
छपैया : : **www.chhapaiya.com**
महेसाणा : **www.mahesanadarshan.org**
टोरडा : **www.gopallalji.com**
नारायणघाट: **www.narayanghat.com**
वडनगर : **www.vadnagar.com**

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५
● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

सर्वोपरि स्वामिनारायण भगवान

- साधु देवस्वरुपदासज (जयपुर)

स्वामिनारायण भगवान के भक्त कितने वर्षो से सत्संग में रहकर भगवान की भक्ति करते हैं। यह महत्व पूर्ण नही है। परंतु स्वामिनरायण भगवान सर्व अवतार के कारण है सर्वोपरि भगवान है। हृदय में कितनी द्रढता है वह ज्यादा महत्वपूर्ण है। समझदारी के साथ श्रद्दा का मिलन है तभी यह बात भक्त को समझ में आती है। जो श्रद्धा को समझदारी का साथ नहीं मिलेगा तो भी यथार्थ ज्ञान का बोधनहीं होगा। समझ तथा श्रद्ध के समन्वय के बिना एक स्वस्थ तथा परिशुद्ध सर्वोपरि उपासना प्राप्त करना आसान नहीं है। वचनामृत शास्त्र में भी समजदारी तथा श्रद्धा का समन्वय दिखाया गया है, सच्ची समझदारी ही सत्संग का भूषण है, तथा गलत समझ सत्संग का दूषण है । स्वामिनारायण भगवान को सर्वोपरि समझने में पटे प्रसंग महत्वपूर्ण है।

श्रीजी महाराज दादा खाचर के दरबार में बिराजमान थे। साधु तथा हरिभक्तों की सभा भरी हुई थी। प्रागजी दवे कथा कर रहे थे। उस समय धरमपुर के हरिभक्त भाउशवजी आये, दंडवत श्रीजी महाराज के चरणादिवन्द में मस्तक रख दिया । भक्त को परदेशी समझकर बहुत प्रेम से स्वागत किया। महाराजने उनको सभा में वैठाया । तब भाउरावजी समीप जाकर बैठे । महाराजने कहा ''कथा करिये ।'' प्रागजी दवेने कथा की शुरुआत की।

उस समय नाई हरिभक्तने कहा कि, ''महाराज मुझे आपकी सेवा करनी है, महाराज आसन पर से उतरकर मृगचर्म पर बिराजमान हुए।

मूलजी ब्रह्मचारीने आकर कहा कि, ''महाराज भोग तैयार है'' । महाराजने कहा कि ''भोग यही ले आओ । महाराज बिना नहाए भोजन करने लगे । इस दृश्य को देखकर भाउरावजी को संशय हुआ कि क्या भगवान ऐसे होते है ? जो बिना नहाये-मुख धोये ऐसे ही भोजन करने लगे।

मूलजी ब्रह्मचारीने महाराज को मुखवास दिया । मुखवास खाते-खाते महाराजने कहा कि, ''अब आप कथा करो । यह सब देखकर भाउरावजी को बहुत परेशानी हुई । कुछ इस प्रकार के संकल्प होने लगे की ''बहुत खर्च करके यहाँ आये और सारे मनोरथ व्यर्थ हो गये । तब महाराज आसन पर से खड़े हुए और भाउरावजी के सामने देखा तो उनका शरीर गिर गया। और भाउरावजी को बद्रिकाश्रम में बड़े सिंहासन पर बिराजमान नरनारायणदेव उसी आसन पर दिखाई दिये

। जिस पर श्रीजी महाराज बिराजमान थे । नरनारायणने कहा कि, ''यह भगवान तो सर्व अवतार के कारण है ।'' यह सब भाउरावजी को दिखाई दिया । और वे पुनः अपने शरीर में लौट आये ।

महाराजने आसन पर से भाउरावजी के सामने देखा और कहा भाउरावजी को श्वेतद्वीप में वासुदेव भगवान दिव्य सिंहासन पर श्रीजी महाराज की तरह विराजमान दिखाई दिये । वासुदेव भगवानने कहा कि, ''यह तो सर्व अवतार के कारण रुप सर्वोपरि भगवान है। यह सब कुछ भाउरावजी को दिखाई दिया । वापस देहमें आने के बाद भी संशय दूर नहीं हुआ । फिर से महाराजने उनके सामने देखे तो उन्हे वैकुंठधाम दिखाई दिया । वहाँ पर भगवान स्वामिनारायण प्रत्यक्ष दिखाई दिये । बाद में उन्हें प्रभु में निश्चय हो गया ।

पुनः महाराजने उनकी तरफ देखा तो गोलोक धाम का अन्तर्मुख से दर्शन होने लगा । सर्वोपरि भगवान का प्रत्यक्ष दर्शन करने वाले भाउराव को दृढता के साथ निश्चय हो गया । निश्चय के विना सत्संग में अस्तित्व का होना कठिन है । विशुद्ध सर्वोपरि उपासना से भक्त में भक्ति दृढ होती है ।

श्री स्वामिनारायण मंदरि अमदावाद में परमकृपालुश्री नरनारायणदेव, आदि तीनो मंदिर में नूतन सुवर्ण सिंहासनमें सेवा करने के लिये हरिभक्तों को निवेदन

भरतखंड के अधिपति परमकृपालु इष्टदेव श्री नरनारायणदेव को स्वयं सर्वोपरि श्रीहरिने अपनी बांहो में भरकर प्रतिष्ठित किया था । उस समय से अमदावाद शहर में रहने वाले श्रीहरि के आश्रित तथा समग्र श्री नरनारायणदेव देश के देश विदेश में रहने वाले सभी आश्रित सभी प्रकार से सुखी हुये हैं । आध्यात्मिक तथा आर्थिक रीति से सम्पत्तिवान बने है । श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की शुभ आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद में श्री नरनारायणदेव, श्री धर्मभक्ति, हरिकृष्ण महाराज तथा राधाकृष्णदेव का सुवर्ण सिंहासन जैसे कार्य किये जा रहे हैं । ऐसा भव्यातिभव्य अद्वितीय अलौकिक सुदंर कार्य का आयोजन किया गया है । शास्त्र में सुवर्णदान श्रेष्ठ दान के रुप में वर्णित है । उसमें भी भगवान के उपयोग के लिये यह दान तो सर्वश्रेष्ठ कहा जायेगा । इसलिये श्रीहरि के सभी आश्रित जन इस यज्ञ में सहभागी हों, इससे उनके मोक्षका मार्ग तथा कल्याण का मार्ग खुल जायेगा । भगवान से विशेष और कौन हो सकता है । अपना द्रव्य देव के लिये उपयोग में आयेगा तो अपने सम्पत्ति की उपयोगिता कही जायेगी । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की सभी सत्संगियों को आज्ञा है कि ऐसे सुंदर अलौकि कार्य में अपने द्रव्य का सदुपयोग करके जीवन को सार्थक बनायें, इससे अक्षरधाम का मार्ग प्रसस्त बनेगा ।

इसलिये प्रिय भक्तों से इस महाभागीरथ सेवा यज्ञ में सहभागी बनकर श्रद्धा भक्ति के साथ यथा सम्भव सेवा करने का अनुरोधहै।

महंत स्वामी स.गु.शा.हरिकृष्णदासजी
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर-अमदावाद

प.पू. बड़े महाराजश्री की अमृतवाणी (सीडनी न्युजीलेन्ड)

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)
सहयोग : पार्षद श्री कनुभगत गुरु पार्षद वनराज भगत

श्रीजी महाराजने वचनामृत में बहुत सारे दृष्टांत दिये हैं। वह इसलिये कि दृष्टांत से जल्दी समझ में आता है। एक सामान्य दृष्टांत समझने लायक है ।एक अवकाश यान पृथ्वी से चंद्र की तरफ जा रहा था । अन्दर दो अवकाश यात्री थे। एकाएक सभी यंत्र बन्द हो गये। एक ने दूसरे से पूछा कि सभी यन्त्र इस समय बन्द हो गये हैं तो हम नीचे जा रहे हैं या ऊपर उसे कुछ खबर नहीं पड़ रही थी। दूसरे ने कहा - थोडे समय तक खिड़की में से देखते रहो । यदि चन्द्रमां बड़ा दिखाई दे तो चन्द्र की तरफ जा रहे है। यदि पृथ्वी विशाल दिखाई देने लगे तो समझों कि हम नीचे की तरफ जा रहे हैं। इसी तरह हमारे जीवन के विषय में है जब संसार के प्रति एटेचमेन्ट घटने लगे और भगवान की तरफ भाव बढने लगे तो समझना चाहिये कि ग्राफ ऊपर जा रहा है । यदि इसके विरुद्ध हो तो समझना चाहिये कि ग्राफ नीचे जा रहा है। बड़ी सामान्य बात है।

महाराज इस सम्प्रदाय की रचना के लिये अथक परिश्रम किये हैं। नंदसंत लिखते है कि महाराज के समय संत एक गाँव से दूसरे गाँव जब विचरण करते तब उनके पास बैलगाडी का साधन था। आज के जमाने में सभी, मर्सीडीज, लेक्सस ऐसी गाडियां होती है। उस समय संत बैलगाडी पर बैठकर गाँव-गाँव फिरते थे उसमें भी गाडी सभी के पास नहीं होती थी। संतो की संख्या की अपेक्षा बैल गाडी बहुत कम थी । इसलिये महाराज आज्ञा करते कि वृद्ध संत मात्र गाड़ी में बैठकर जायेगे। अन्य पैदल जायेंगे। वृद्ध संत भी क्रमश: बैलगाड़ी में बैठते थे। इसी तरह महाराज ने संप्रदाय की रचना की थी। एक भी ऐसा सत्संगी नहीं है जो भगवान के सन्मुख न हो, ऐसा तो महारजा का प्रयास था।

एक व्यक्तिजो सत्संगी नहीं था। उसे विचार आया कि यदि स्वामिनारायण भगवान हों तो मैं जब उनके पास जाउं तो वे अपने नाभी पर रुपया रखने दें। कितना वियर्ड विचार कहा जायेगा इस समय हमें कोई कहे तो हम उसे एक्सेप्ट नहीं करेंगे । महाराज तो अन्तर्यामी, उसके विचार को समझ गये । वह भाई सायंकाल महाराज के पास आया। महाराज संतो के साथ बैठे हुये थे। महाराज ! इस समय सायंकाल क्यों सो रहे हैं। संतो ने पूछा कि महाराज ! आप इस समय क्यों सो रहे हैं ? महाराजने कहा कि अभी आपलोग शांति से देखो । महाराजने अपने पेट के उपर से डुपट्टा हटाया। वह भाई आया और महाराजने कहा अपना रुपया यहाँ पर रखो। उस भाई को नीश्चय हो गया और वह सत्संगी हो गया। इस तरह जो भी भगवान के सन्मुख जाता है वह मुक्त स्वरुप हो जाता है। सत्संग करने में कितना संघर्ष करना पड़ता है।

भुज की लाधीबाई को महाराज ने कहा कि आप

विधवा भले हैं हमारे लिये आपको सधवाका वस्त्र पहना है । उस जमाने में विधवा को सधवा का वस्त्र पहनने वालीको तिरस्कृत किया जाता था । लाधी बा को महाराजने कहा कि आप भुज की बाजार में सधवा का वस्त्र पहर नकर चलें । महाराज की आज्ञा मानकर वे भरी बाजार में निकलती है । यह सब तभी संभव है जब व्यक्ति को महाराज की महिमा समझ में आई हो ।

एकवार महाराज सुदंरजी सुथार के यहाँ आये और सुन्दरजी सुथार तो महाराजके परम भक्त थे । यह भुज की बात है । महाराज उस समय सुंदर मूड में थे । सुंदरजीने कहा, महाराज ! एक वस्तु मांगता हूं । आपको इस घर में सदा के लिये रहना है । जब तक मैं नही कहूँ, तब तक आप नहीं जाइयेगा । महाराजने ओके कह दिया । अब अनंत कोटि के अधिपति, वनवचिरण के समय जितने राजाओं से मिले । कितने लोग अपनी कन्या के साथ विवाह करके अपना राज्यपाट देदेंगे । आप यहीं रहिये लेकिन महाराज कहीं नही रुके । लेकिन यहाँ पर भक्त के अधीन हो गये । और प्रोमीश कर दिये । हुआ ऐसा कि भुज के राजा का दिवान जगजीवन था । वह महाराज का द्वेषी था । उसे खबर पड़ी कि स्वामिनारायण सुदंरजी के यहाँ पधारे हुये है । इसलिये बड़ी क्रोधमें सुंदरजीने कहा कि महाराज ! आप मकान के ऊपर जाकर छिप जाइये । आप कुछ बोलियेगा नहीं । जब वह पूछेगा तो मैं कह दूंगा कि स्वामिनारायण यहाँ नही आये है । वह चला जायेगा तो अपना प्रश्न हल हो जायेगा । महाराजने कहा कि अच्छा । महाराज ऊपर चले गये । क्यों स्वामिनारायण यहाँ आये है ? हाँ आये थे लेकिन दूसरे गाँव चले गये । किसी गाँव में नही गया हूँ यही बैठा हूँ महाराजने भीतर से आवाज दिया । सुंदरजी को हुआ कि महाराजने ऐसा क्यों कह दिया ? आवाज सुनते ही बहुत गरम हो गया । अभी सिपाहियों को लेकर आता हूँ । स्वामिनारायण को कैद करलेता हूँ ऐसा कहकर वह चला गया । अब सुन्दजी घबड़ाने लगे । महाराज से उन्होंने कहा कि आप से यह बात हुई थी कि आप मौन रहेंगे कुछ बोलेंगे नही । महाराज ने कहा जो हुआ वह हो गया, अब आगे क्या करना है । दीवान अभी आकर आप सब को परेशान करेगा ? आप अभी गंगाराम मल्ल के घर चले जाइये । महाराज ऐसा चाहते भी थे । क्योंकि सुदंरजी जब तक कहें नही तब तक महाराज जायेंगे । घर में आये हुये प्रभु के माहात्म्य का थोडा भी ख्याल किये होते कि ये तो अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति है इनका कोई व्यक्ति या पुलिस क्या कर सकता है लेकिन यह भाव नहीं आया । इसी तरह जि के मन में जब यथार्थ महिमा समझ नहीं आयेगी तब तक सामने आये हुए भगवान अथवा आप के घर में आये हुये भगवान आप से दूर चले जायेंगे । इसलिये सदा महाराज की महिमा समझते रहना चाहिये ।

एक गाँव में एक बाबा रहता था । उस बाबा को कोई राम राम कहे तो बहुत गाली देता था । किसी ने उस बाबा से पूछा कि जब आप को लोग राम राम कहते हैं तो सभी को क्यों गाली देते हो । उसने कहा कि जब लोग हमें राम राम कहते है तब मैं खिजाता हूँ । वे वही सही समझते हैं लेकिन ऐसा नही है लोगो को ऐसा करके राम राम बोलवाता हूँ और आज पूरा गाँव राम राम कहने लगा है । इसी तरह सत्संग के लिये सभी को सहन करना पडेगा । जगत की महिमा कम करके प्रभु की महिमा को विशेष समझना पडेगा ।

एक सोनी था । उसका व्यापार सोने का था । उसे एक पुत्र था । कम उम्र में ही वह धाम में चला गया वह कर्ज से दबाहुआ था । पुत्र बहुत छोटा था । उसके पास दो हीरा था । उसके मन में ऐसा हुआ कि इस हीरे को बेचकर पिता का कर्ज दूर कर दूं ।

उसके मामा का भी सोने का व्यापार था । उस हीरे को देखकर मामाने विचार किया भांजे का हितकरना है ।

मूली देश की प्रथम तथा अहमदाबाद देश की चौथी बाल सत्संग शिबिर

- शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदास (कोटेश्वर गुरुकुल)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वलाद से एवं प.पू. भावि आचार्य महाराजश्री की अध्यक्षता में बालको में शुभ संस्कारो का सिंचन हो तथा संप्रदाय के सिद्धान्तो का यथार्थ ज्ञान हो इस आशय से श्री नरनारायणदेव बाल मंडल का बाल सत्संग शिबिर आयोजित हुआ था । यह कार्यक्रम श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में ता. १९-११-२ से ता. २१-११-१२ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत श्याम सुंदरदासजी उत्तम व्यवस्था की थी ।

श्री राधाकृष्णदवे-हरिकृष्ण महाराज के प्रांगण में भव्य बाल सत्संग शिबिर का आयौजन किया गया था ।

जिस में करीब १२० गाँव से ११०० बालक भाग लिये थे । जिसका प्रचार प्रसार मात्र सत्संग में ही नहीं बल्कि **E-TV, TV-9** जैसे चेनल पर तथा दिव्य भास्कर जैसे न्युज पेपर द्वारा सर्वत्र व्यापक हुआ था । इतना ही नहीं, थोडे समय में मूली देश तथा अहमदाबाद देश के बहुत सारे गाँवो के मात्र १३ वर्ष से १८ वर्ष तक की उम्रवाले बालक शिबिर में भाग लिये थे ।

त्रिदिनात्मक बाल सत्संग शिबिर में ता. १९-११-१२ को सायंकाल ९-०० बजे प्रत्येक बालकों का रजिस्ट्रेशन हुआ था । इसके बाद विद्यार्थियों ने ठाकुरजी की आर्ती का दर्शनकरके प्रसाद ग्रहण किया था । शिबिर में बालकों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया था । जिसमें श्री नरनारायणदेव बाल सत्संग मंडल, सुरेन्द्रनगर के बालकों द्वारा नृत्य के साथ कीर्तन प्रस्तुत किया गया था ।

इस तरत प्रथम दिन का कार्यक्रम था । दूसरे दिन प्रारंभ में सभी विद्यार्थी नित्य विधिकरके राधाकृष्णदेव का दर्शन किये और बाद में नास्ता किये । इसके प्रथम सत्र का कार्य आरंभ किया गया । जिस में श्रीजी महाराज द्वारा बनाये गये ९ मंदिरों की महिमा इस विषय पर शा. स्वा. सत्यप्रकाशदासजीने बालकों को ज्ञानदिया था । बाद में प.पू. लालजी महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । दीप प्रागट्य का कार्यक्रम प.पू. लालजी महाराजश्री, महंत स्वामी श्याम सुन्दरदासजी, स.गु.स्वा. देवप्रकासदाजी, स्वा. कृष्णवल्लभदासजी इत्यादि संतो के साथ हुआ था । वृद्ध संतो ने बालकों को आशीर्वाद दिया था । बालकों ने कीडा भी की थी । बीच में भोजन के बाद ९ बजे से ३ बजे तक आराम के बाद दूसरे सेशन में प.भ. नारायणभाई तथा स्वा. सत्यसंकल्पदासजीने बाल मंडल का बालक कैसा होना चाहिये ''इस विषय पर ज्ञान दिया था । प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में चाकलेट उत्सव भी किया गया था । बाद में प्रत्येक शिबिरार्थी ठाकुरजी की आरती के बाद प्रसाद लेने पधारा था । रात्रीय कार्यक्रम में रास गरबा का आयोजन किया गया था । जिस के कलाकार मयंकभाई मोदी थे । गरबा के बाद सभी बालक नास्ता करके आराम करने गये थे ।

तीसरे दिन प्रारंभ से नित्य विधितथा आरती करके नास्ता से निवृत्त होकर तृतीय सेशन में हाजर हुये थे । जिसमे स्वा. सूर्यप्रकाशदासजीने बालकों को ''व्यसन मुक्ति जैसे जीवन दूषणरुप विषयोंपर ज्ञान प्रदान किये

थे । बाद में संत भक्तों के साथ मिलकर सभी शिबिरार्थी ''मूली दर्शन'' में प्रसादी के स्थानों का दर्शन कराने ले गये थे । वापस आकर सभी एक साथ भोजन किये थे । बाद में प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ सभी बालक फोटो खिचवाये थे । अंत में सभा की पूर्णाहुति के समय सभा में प.पू. लालजी महाराज के सानिध्य में इनडोर गेम, गरबा आदि में प्रथम-द्वितीय-तृतीय नं. प्राप्त करनेवाले बालकों को सम्मानित किया गया था । अन्त में महंत श्यामसुंदरदासजी, स्वा. विश्वविहारीदासजी अमदावाद महंत स्वा. के प्रतिनिधिस्वा. नारायणमुनिदासजी को. व्रजभूषणदासजी इत्यादि संतो की प्रेरक वाणी के बाद प.पू. लालजी महारजी ने बालको को शुभाषीष दिया था । विदाई के समय सभी बालकों को टी-शर्ट, टोपी तथा आशीर्वाद पत्र स्मृति के रुप में दिया गया था । प्रत्येक २० विद्यार्थी के ऊपर विस्तार के प्रमाणानुसार ७७ संचालक मित्र पधारे थे । इन सभी की सेवा प्रसंशनीय थी । अन्त में प.पू. लालीज महाराजश्रीने शुभाशीर्वाद दिया था । शिबिर में सभी का महाराजश्रीने सभी को शुभाशीर्वाद दिया था । शिबिर में सभी का ग्रुप के अनुसार कार्यक्रम हुआ था । जिस में राधाकृष्णदेव ग्रुप, श्रीहरिकृष्ण ग्रुप, श्री घनश्याम ग्रुप, श्री नरनारायण ग्रुप के रुप में कार्य किया गया था ।

सम्पूर्ण आयोजन में सभी संतो की सेवा सराहनीय थी । जिस में जे.के. स्वामी, व्रज स्वामी, गोपाल जीवन स्वामी, प्रवीण भगत, चंदु भगत इन सभी की सेवा सराहनीय थी । श्री नरनारायण युवक मंडल बापूनगर, जयेशभाई, भाईलालभाई, प्राणजीवनभाई इत्यादि भक्तों की सेवा प्रेरणारुपी थी ।

समग्र सभा का संचालन स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने तथा सत्यप्रकाशदासजीने किया था ।

अनु. पेईज नं. ९ से आगे

उसने कहा कि थोड़ी प्रतिक्षा करो मेरे पास कोई ग्राहक आयेगा तो उसे छेंच देंगे । इसके बाद उसे अपने यहाँ काम पर रख लिया ५-६ महने काम करने के बाद भांजे से कहा अब तूं वह हीरा ले आव । ग्राहक आ गया है । वह घर से हीरा लेकर चला तो उसे लगा कि यह हीरा शुद्ध नहीं है - उसे भी अब इतने दिनो तक काम करने से हीरे की परख हो गयी थी, इसलिये हीरे को रास्ते में ही फेंक दिया । बाद में मामा की दुकान पर पहुंचा तो मामाने कहा क्यों हीरा ले आये ? उसने कहा मामा वह हीरा खोटा था । यह सुनकर मामाने कहा कि मैं जब हीरा देखा था तभी उसके खोटे होने की जानकारी हो गयी थी । तो आपने उसी समय क्यों नही बताया ? मामाने कहा कि उसी समय बता दिया होता तो तुम मेरी दुकान में काम करके हीरे की पहचान सीखने नहीं आते । और उस समय तुम हमारी बात को मानते नहीं । तुम्हे यह भी होता कि मामा मेरे हीरे को चाहते होंगे । अब तुम्हें हीरा की पहचान आ गई इसलिये खोटा हीरा को तुम स्वयं फेंक दिये । इसी तरह इस जगत में जब स्वयं जगत की असह्यता का ख्याल आयेगा तभी सच्चा सुख जो श्रीहरि के चरणों में है उस तरफ गति होगी । तभी भगवान में सच्ची भक्ति होगी और दृढता होगी । फिर कल्याण निश्चित है ।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

आचार्य पांडे केशवप्रसादजी
अयोध्याप्रसादजी महाराज

श्री नरनारायणदेवना चरण कमल समीप शुभ स्थान श्री अमदाबादथी लिखावित आचार्यश्री केशवप्रसादजी महाराजश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज।

स्वस्ति श्री झालावाड देश महाशुभ स्थाने उत्तमोत्तम परमपवित्र श्री प्रत्यक्ष पुरुषोत्तमना चरण कमलो पासक श्रीजी महाराज कृत मर्यादा पालक एवं सर्व शुभ उपमायोग्य हरिभक्त बाई भाई समस्त अमारा जयश्री स्वामिनारायण पूर्वक शुभाशीर्वाद वांचवा। अत्र श्रीजी महाराजना प्रतापथी कुशल छे ने तमारी कुशलता ना पत्र लखवो। बीजुं विशेष लखवा कारण ए छे जे तमारा सर्वेनी शुभ वासनानी वृद्धिने अर्थे ने अशुभ वासनानी निवृत्तिने अर्थे सर्वे हरिभक्तने श्रीजी महाराजनी आज्ञा प्रमाणे वरसोवरस पोतपताना नामनो धरमादो आपवो। ते नामना धर्मदाने उघराववा सारु साधु त्यागवल्लभदासजीनुं मंडल मोकल्युं छे। तेमने श्रीजी महाराजनी आज्ञा प्रमाणे उघरावी आपजो ते अमोने पहोंचशे। ने जेने नाम लखाव्युं न होय तेमणे पोतानुं नाम लखाववुं। एमां श्रीजी महाराजनी अति प्रसन्नता छे। ने पोताना गाममां मंदिर वगेरे दरेक धर्म संबंन्धिकार्य आवे तेमां नामनो धर्मादो वापरवो नहि. एवी श्रीजी महाराजनी आज्ञा छे। तेमां फेर पाडवो नही। ने नित्य प्रत्ये मंदिर मां आववुं ने कथावार्ता भजन स्मरणनो अभ्यास राखवो ने आ पत्रनी अवधिसंवत १९३३ ना कारतक सुदी-१५ थी लेईने संवत १९३४ना कार्तिक शुदी-१५ पर्यंत छे. तार पछे आ पत्र मानवो नही। लिखित पुराणी खुसाल प्रभुरामना जयश्री स्वामिनारायण वांचजो।

संवत् १९३३ कार्तिक सुदी-१५

श्रीजी के आज्ञानुसार संप्रदाय की प्रणालिकानुसार दान धर्म लेने के लिये प.पू.ध.धु. आचार्य केशवप्रसादजी महाराजश्रीने लिखवाया है। प्रत्येक हरिभक्त अपने नाम से दान भेंट अवश्य करें। इस विषय में महाराज ने कहा है कि असुभ वासना की निवृत्ति के लिये तथा शुभ वासना की वृद्दि के लिये दान भेंट करना। दान भेंट धर्मवंशी आचार्य को मिले इस तरह का भेंट पत्र होना चाहिये। तभी हम महाराज के होंगे और महाराज सभी प्रकार से रक्षा करेंगे। जिसका नाम धर्मवंश के डायरी में आयेगा उसी की नामावली अक्षरधाम में श्रीहरि नोंट करेंगे। अक्षरधाम में बैठे हुये श्रीहरि हमारे प्रसन्न हो ऐसा करना चाहिये तभी प्रसन्नता कही जायेगी। धर्मवंशी आचार्य के करुणा भरे नेत्रो में से उनकी वाणी में से तथा उनके वर्तन से हम प्रत्यक्ष दर्शन करते हैं।इससे धन-सम्पत्ति के लेने देने की कोई वात नहीं है। लेकिन श्रीहरि की आज्ञापालन की वात है। इसलिये सत्संगी मात्र को चाहिये कि महाराजश्री की आज्ञा में रहने का खटका रखना चाहिये.

यह पत्र श्री स्वामिनारायण म्युजियम के हाल नं. ११ में हरिभक्तों के दर्शनार्थ रखा गया है। सभी लोग भाव पूर्वक दर्शन करने अवश्य जांय।

प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि नवम्बर-२०१२

रु।.५००००/-	हीराणी धनजी कुवरजी ध.प. राधाबाई सह परिवार, फोटडी-कच्छ।	रु।.५१००/-	पाटडीया ज्वेलर्स, जयेशभाई सोनी, अमदावाद।
रु।.२५०००/-	करशनभाई मनजी हिराणी ध.प. अमरबाई करशनभाई हिराणी सहपरिवार पारायण के निमित्ते रामपर-वेकरा (कच्छ) गांधीधाम।	रु।.५०००/-	चन्द्रिकाबहन अनिलकुमार जुगलदास, यु.एस.ए.
		रु।.५०००/-	घनश्याम एन्जीनीयरींग, बोपल
रु।.२१०००/-	पटेल चंदुभाई जीवीदास, इटादरा (माणसा)	रु।.५०००/-	रमेशभाई रवजीभाई राठोड, इसनपुर
		रु।.५०००/-	एक सत्संगीबहन, नारणपुरा
रु।.२००००/-	एक हरिभक्त, अमदावाद।	रु।.५०००/-	सुशीलाबहन तथा जसवंतभाई मोदी, अमदावाद।
रु।.१११११/-	स्व. कानजीभाई करशनभाई पटेल, इटादरा (माणसा)	रु।.५०००/-	डॉ. हरिकृष्णभाई गोकलभाई पटेल, सापावाडा
रु।.११०००/-	पटेल अंकुर धीरजभाई, अमदावाद।		
रु।.११०००/-	विशाल चमनलाल ठक्कर, मुंबई	रु।.५०००/-	महेशभाई पटेल लालोडावाला, वापी
रु।.१००००/-	मनसुखभाई छगनभाई, मनाणी (सिंगापोर)	रु।.५०००/-	त्रिभोवनदास हरिदास पटेल, आजोल
रु।.१००००/-	पटेल पुनमभाई मगनभाई, अमदवाद	रु।.५०००/-	नरेन्द्रभाई बाबरभाई पटेल परिवार, अमदवादा
रु।.७००/-	रमीलाबहन अरविंदभाई पटेल, विराटनगर		
रु।.५०००/-	परसोतमभाई वी. पटेल, गुमासणा	रु।.५०००/-	नटवरभाई बाबरभाई पटेल, अमदावाद।
रु।.६५०००/-	घनश्याम एन्जीनीयरींग इन्डस्ट्रीझ, बोपल	रु।.५०००/-	विशाल नरेन्द्रभाई पटेल परिवा, अमदावाद

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (नवम्बर-२०१२)

ता. २८-८	ललितकुमार जगजीवनराम ठक्कर, अमदावाद	ता. १८	किरीटभाई रमणभाई पटेल, राणीप
ता. ११	रमणीकभाई बी. सरधारा, बापुनगर	ता. २०	हसमुखभाई कांतिलाल शाह, ह्युस्टन
ता. १२	अ.नि. कृष्णजीवनदासजी के पुण्य तिथि के निमित्ते।	ता. २१	सुधीरभाई पी.प टेल (दासभाई) बापूनगर
		ता. २३	पटेल त्रिभोवनदास अभिचंददास आऊपुरा
ता. १६	महेन्द्रकुमार छोटालाल पटेल कालीगाँव-साबरमती	ता. २५	समस्त सत्संगसमाज तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, राणीप।
ता. १७	रीमाबहन लक्ष्मणभाई वेकरिया, लंडन	ता. २७	शशिकान्तभाईप टेल ऊँझावाला-केनेडा (उदयनभाई महाराज)

अहमदाबाद में ता. १९ से २५ नवम्बर तक हेरिटेज वीक मनाया गया, कई जगह पर हेरिटेज से सम्बन्धित विशिष्ट कार्यक्रम किये गये। श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भी ता. २१ नवम्बर को देश-विदेश से आये हुए हेरिटेज निष्णात तथा उससे सम्बन्धित ज्ञान रखने वाले के लिए आयोजन किया गया था। जिसमें प.पू. बड़े महाराजश्री पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) तथा महंत स्वामी हरिकृष्णदासजीने अपने संप्रदाय तथा श्री स्वामिनारायण म्युजिय के हेरिटेज के विषय में उपस्थित सभी को उचित ज्ञान दिया गया था। बाद में सभी लोग म्युजियम का दर्शन करके तथा प्रसादी की वस्तुओं का यथार्थ ज्ञान करके धन्यता का अनुभव किये थे।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी
(गांधीनगर)

मात्र उपदेश से काम नही होता

(शा. हरिप्रियदास – गांधीनगर)

''रोगार्तस्य मनुष्यस्य यथाशक्ति च मामकैः''

प्रिय मित्रो ! शिक्षापत्री का यह श्लोक जल्दी समझमें नहीं आयेगा । लेकिन इस सत्य घटना को वांचने के बाद सब ख्याल आजायेगा । जगत के कल्याण के लिये स्वामिनारायण भगवानन उत्तर भारत की यात्रा पूर्ण करके तीर्थो को पावन करते हुये दक्षिण भारत की तरफ प्रयाण किये वहाँ पर सर्व प्रथम तीरुपति बालाजी का दर्शन करके रामेश्वर की तरफ प्रयाण किया । रास्ते में एक घटना घटी ।

सेवकराम नाम का एक यात्रिक रामेश्वर की यात्रा में जा रहा था । उसके साथ अन्य यात्रिक थे, साथ में उसके शिष्य भी थे । रास्ते में नानाविधमुश्किलियों के कारण सेवकराम विमार पड़ गया । दो-तीन दिन में तो उसकी बिमारी अधिक बढ गयी । वह संग्रहणी का शिकार हो गया जिससे शरीर कृष काय हो गयी अब चलपाना कठिन था । उसके शिष्य भी उसका साथ छोड़ दिये ।

सेवकराम के पास एक हजार रुपये की सोना-मोहर था । लेकिन सौना-मोहर सेवा कर सकता है क्या ? कितने अज्ञानी मानते है कि जिसके पास सम्पति होती है उसके पास सेवा चाकरी करने वालों की कमी नहीं रहती । सेवकराम के पास सम्पत्ति तो थी फिर भी दुःखी तो था । वह अपने दुःख से दुःखी होकर रोने लगा ।

स्वामिनारायण भगवान यात्रा करते हुये तिरुपति बालाजी से रामेश्वर पधार रहे थे । उस समय उस साधु को रोते हुये देखकर उसे आश्वासन ही नहीं दिये बल्कि उसकी सेवा करने लगे । अब वे अपनी यात्रा को रोककर उस सेवकराम की सेवा में लग जाते हैं । केले के बगीचे में से केला का पत्ता लाकर ऊँची गद्दी बनाकर उसी पर सेवक राम को सुला देते हैं । प्रतिदिन स्नान कराने लगे । इस तरह की उत्तम सेवा से सेवकराम जल्दी ठीक हो जाता है । उसके पेट में अनाज पचने लगता है ।

बगल के गाँव में से भिक्षा मांगकर लाते और उसे पकाकर सेवकराम को खिलाते । बाद में सेवकराम को सुताकर गाँव में भीख मांगने जाते । यह क्रिया प्रतिदिन की थी । दूसरी बार जिस दिन भिक्षा नहीं मिलती उस दिन उपवास भी करना पड़ता था । इधर सेवकराम को खूब भूख लगने लगी । वह प्रतिदिन अपने पास से प्रभु को पैसा देता और गाँव में से घी, चीनी इत्यादि पदार्थ मंगा कर भोजन करता ।

दुनिया में दुःख अनेक हैं उसमे कुछ दुःख अपने स्वभाव के कारण होता है । सभी साथ चलने वाले उसे अकेले छोडकर चले गये । उसके शिष्य भी सेवा नहीं किये और अकेले छोड़कर चले गये । यह सब कंजूष स्वभाव के कारण हुआ । भगवान इतनी अधिक सेवा करते थे फिर भी वह अपने लिये ही भोजन बनवाता और खाता, लेकिन प्रभु को भोजन नहीं कराता । भगवान तो निःस्वार्थी है । उनका जीव के साथ कोई स्वार्थ नहीं होता । जीवों के अवगुण के सामने प्रभु कभी नही देखते । एक मास पर्यन्त प्रभु सेवकराम के साथ रहकर सेवा किये । अब वह पूर्ण स्वस्थ हो गया । लेकिन स्वभाव वही का वही । उसने यह समझलिया कि विना वेतन का एक नौकर मिल गया । अपना एक मन का भार प्रभु से उठवाता था । स्वयं खाली हाथ

चलता था। सेवकराम को पूर्ण स्वस्थ करके प्रभु वहाँ से रामेश्वर पधारे।

सुचारित्र्यका निर्माण मात्र उपदेश से नही होता, उसके साथ वैसा आचरण करना पड़ता है। उपदेश तथा आचरण द्वारा ही जगत में चारित्र्य का निर्माण होता है।

इतिहास साक्षी है कि गुजरात, कच्छ, काठियावाड में भगवान स्वामिनारायण ने जनजागृति का कार्य किया था। पिछड़े वर्ग के बहुत सारे लोगो के जीवन को निर्मल किया था। चोर-लुटेरो को सच्चा सेवक, भक्त बनाया था। समाज में मानव धर्म के उत्तम संस्कारो का सिंचन किया था।

सर्वोपरि भगवान स्वामिनारायणने मात्र उपदेश नहीं दिया बल्कि आचरण करके स्वयं उदाहरण रुप बने। इसके लिये उपरोक्त उदाहरण (सेवकराम का) आज के समाज के लिये औदाहार्य है। इसी तरह की सेवा निष्कपट भाव से मानव मात्र की करनी चाहिये।

शुष्क तथा निष्प्रयोजन उपदेश से सुचारित्र्य का निर्माण नहीं होता। समाज को चारित्र्यवान बनाने के लिये स्वामिनारायण भगवानने स्वयं भूखे प्यासे रहकर उनके अपमान सहकर समाज की सेवा की थी। सेवा तथा समर्पण द्वारा समाज में दीव्य ज्योति प्रगट कीजा सकती है। समाज को उच्च चारित्र्य वाला बनाने कि लिये अनेकप्रकार के मार्ग का प्रथप्रदर्शन किये है। आज के युग में सर्वत्र चरित्र हीनता दिखाई देती है। कहीं भी सद्गुण विवेक, नीति, संयम इत्यादि दिखाई नही देता।

ऐसे युग में चारित्र्य निर्माता भगवान स्वामिनारायण के उपदेश तथा आचरण हम याद करेंगे और जीवन में उतारेंगे तो सुचारित्र्य की पुनीत गंगा निरंतर बहती रहेगी।

•

सहजानन्दी सिंह

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

सम्प्रदाय में ऐतिहासिक घटना बनी - खोखरा, मेहमदावाद में खूब लड़ाई हुई। श्रीहरिने पार्षदों को आज्ञा की कि हथियार धारण करो, अपने क्षत्रिय धर्म को दिखाओ। उस युद्ध में पार्षदो की विजय हुई। इसी तरह एक बार और युद्ध हुआ।

महेमदावाद की धरती पर महाराज तथा संतो के साथ वाणी का युद्ध हुआ। जो संत महाराज की आज्ञा को आदेश मानकर जीवन समर्पण करते वही संत महाराजश्रीकी आज्ञा का उल्लंघन करके वाणी युद्ध करने लगे।

किसवात में यह युद्ध हुआ आप जानते हैं? मेहमदावाद में एक वट वृक्ष के नीचे एक सभा में श्रीजी महाराज मुक्तानंद स्वामी तथा साठ संत बैठे थे। उस समय श्रीहरिने संतो से एक प्रश्न पूछा, हे साधुराम! आप किस का ध्यान करते हैं? महाराज! हम तो आपका ध्यान करते हैं - बड़ा आनंद आता है। श्रीहरिने कहा कि आज से हमारा ध्यान आप लोग मत कीजिये। ध्यान करना हे तो मुक्तानंद स्वामी का कीजिये, मुक्तानंद स्वामी शान्त मूर्ति हैं धैर्य मूर्ति है। हमसे बड़े हैं। हमारे बड़े गुरुभाई हैं। हमारे गुरुजी के सबसे श्रेष्ठ शिष्य हैं। इसलिये आप लोग आज से इन्ही का ध्यान कीजिये। अन्य का नहीं? यह सुनते ही वह साधु नाराज हो गया। यह कभी नहीं हो सकता। ध्यान तो आप का ही होगा। श्रीहरि कहते हैं कि हम आज्ञा करते है कि आप सभी को मुक्तानंद स्वामी का ध्यान करना है। नहीं। यह कभी सम्भव नहीं। ध्यान मात्र आपका ही होगा। श्रीहरिने कहा यहाँ से चले जाइये। यदि हमारी बात नहीं माननी हो तो आज से आप विमुख। साधुने कहा, विमुख हो जायेगे लेकिन ध्यान तो आप का ही करेंगे।

वह साधु वहाँ से दूर दूसरे वटवृक्ष के नीचे जाकर बैठ गया। युद्ध में तथा खेल में यह निश्चित नहीं होता कौन जीतेगा और कौन हारेगा। उस संत के जाने के बाद प्रभु शांत हो गये। अब दूसरे संत से पूछने लगे कि आप किसका ध्यान करते हैं। महाराज! आपका, आज से आपको मुक्तानंद स्वामी का ध्यान करना है। नहीं महाराज कहिये तो नित्य दंडवत करुं, मुक्तानंद स्वामी

पेईज नं. १८

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से
"इडर देश महिला शिबिर प्रसंग पर"
(संकलन : नीलाबहन के. पटेल)

यह जीवात्मा चौरासी लाख योनि से परिभ्रमण करते हुये परम कृपालु परमात्मा भगवान स्वामिनारायण की कृपा से मनुष्य शरीर को धारण किया है। यह शरीर क्षण भंगुर है। नाशवंत है। आत्मा अधिकारी है। देह विकारी है। सत्संग दृढ करके धर्म-ज्ञान-वैराग्य-भक्ति को दृढता पूर्वक करनी चाहिये।

धर्म साधारण तथा विशिष्ट इस तरह दो प्रकार का होता है। साधारण धर्म सभी के लिये है। जैसे-चोरी नहीं करना, हिंसा नही करना, मद्यपान नहीं करना इत्यादि।

विशिष्ट धर्म - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इस तरह चार वर्ण होते है। ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम, संन्यास आश्रम इस तरह चार आश्रम होते है। इस में से जो जिसे लागू पडे वह वैसा पालन करता है-

ज्ञान : जिस किसी वस्तु को यथार्थ रुप से समझना ही ज्ञान है।

भक्ति : भगवान का स्नेहपूर्वक गुण गान करना ही भक्ति है।

वैराग्य : भगवान सिवाय अन्य पदार्थ में प्रीति न होना ही वैराग्य है। ''जहाँ स्वच्छता वहाँ प्रभुता'' बाह्य अन्तर (मनु) की शुद्धि रखनी चाहिये। शरीर की शुद्धता (पवित्रता) मन की शुद्धता (पवित्रतातो) रखनी चाहिये। जिस तरह हम किसी के यहाँ गये हों वहाँ स्वच्छता न हो तो अच्छा नहीं लगता। उसी तरह परमात्मा के रहने का घर अपनी शरीर में रहने वाला मन है, वह मन स्वच्छ नहो तो परमात्मा वहाँ कैसे रह सकते हैं। इसलिये हृदय (मन) को स्वच्छ रखना चाहिये।

जैसे कोई व्यक्ति गंगा में चार दिन तक खड़ा होकर तप करे लेकिन मन पवित्र न हो तो गंगाजल में खड़े रहने से स्नान मात्र का फल मिलेगा। मन की शुद्धि के लिये सत्संग तो करना ही पड़ेगा। इसके लिये सच्चे सन्त का समागम आवश्यक है।

इस संसार में कुसंग का रंग जल्दी चढता है। सत्संग का रंग लाने मे काफी समय निकल जाता है। पानी को नीचे तरफ लेजाने के लिये प्रयत्न नहीं करना पड़ता। जब कि ऊपर की तरफ पानी लेजाने के लिये नाना विध(यंत्रादि) की उपाय करनी पड़ती है।

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पाद सेवनम्।
अर्च नं वंदनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्॥

इस प्रकार नवधा भक्ति मे से स्वयं को जिस भक्ति में रुचि हो, जिससे आत्म शक्ति बढे, मन प्रफुल्लित हो वही भक्ति सबसे श्रेष्ठ कही गयी है। पांच समय की मानसी पूजा करने से भगवान की तरफ विशेष प्रेम बढता है। भगवान के चरण पखारने की सेवा का लाभ मानसी पूजा में लिया जा सकता है। जिस तरह बालक की सभी आवश्यकता माता पूरी करती है। उसी तरह हम भी परमात्मा के पास बालक बनकर निर्दोष भाव से भक्ति करेंगे तो परमात्मा अपनी सभी आवश्यकता पूरी करेंगे। अन्त में भगवान की शरणागति स्वीकार करके अहंकार रहित होकर भगवान की भक्ति करना फलदायी होगा। सभी स्त्रियों का आध्यात्मिक मार्ग में उन्नति हो तथा नरनारायणदेव की प्रसन्नता प्राप्त हो ऐसा सभी को शुभाशीर्वाद।

अहमदाबाद की त्यागी बहने भी इस सत्संग शिबिर में आई उनका आत्मबल बढे ऐसी शुभ कामना व्यक्त की थी। शिबिर में यजमान पद जया बहन ने स्वीकार किया था। इसके साथ ईडर देश के २८ गावों की बहनो ने शिबिर का लाभ लिया था। सभा का संचालन नीलाबहन ने किया था।

ईडर देश महिला शिबिर की सम्पूर्ण व्यवस्था महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजीने की थी। प.पू.

गादीवालाजीने खूब प्रसन्न होकर ईडर देश तथा हिम्मतनगर की बहनों का सत्संग बढे ऐसा आशीर्वाद दिया था।

•

अहमदाबाद में ब्रह्मभोज

– पटेल निशा विष्णुभाई (गुलाबपुरा)

श्रीनगर शहर में इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने श्री नरनारायणदेव को अपनी बाहो में लेकर बड़े धूमधाम से प्रतिष्ठित किया था। इस उपलक्ष्य में ब्रह्मभोजन करने की वात हुई तो महाराज ने आनंद स्वामी से कहा कोठार में रुपये हों तो ब्रह्मभोज करावें। स्वामी, कोठार में रुपये नहीं है। लेकिन लालदास गोरा के पास कुछ रुपये है। उन्हें बुलाकर महाराजने पूछा, आपके पास कितने रुपये हैं। प्रभु ! सात हजार रुपये हैं।

आप वे रुपये हमें देदीजिये, मैं ब्रह्मभोज कराना चाहता हूँ। वे ब्रह्मभोजकराने के लिये तुरंत लाकर सात हजार रुपये देदिये।

भगवान ब्राह्मणों को बुलाकर ब्रह्मभोज कराने की वात की। भूदेवो ने कहा हे स्वामिनारायण ! इतना बड़ा ब्रह्मभोज करने के लिये छ महीना पूर्व तैयारी करनी चाहिये थी। इतनी जल्दी कैसे संभव है। आप मजाक तो नहीं कर रहे हैं।

महाराजने कहा ऐसा नहीं है। आप लोग केवल हां कहिये तैयारी तो हमें करनी है ? वे हाँ किये कि शहर में से घी, तेल, आंटा, चीनी इत्यादि की खरीदी हो गयी। श्रीहरि के संकल्प मात्र से एक दिन में ही तैयारी हो गयी। कांकरिया तालाब के किनारे सीधा सामग्री का ढेर लग गया। ब्राह्मण लोग चुल्हाजलाकर लड्डू बनाने लगे। गाँव-गाँव से खाद्य पदार्थ बैलगाड़ियो पर भर-भरकर आने लगा। फाल्गुन शुक्ल-५ को ब्राह्मणों की बड़ी भोजन की पंक्ति बैठी महाराज ने सभी को मन भरकर लड्डू खिलाया ब्राह्मणों को भोजन के बाद सवा रुपये दक्षिणा भी दिया।

इस तरह कांकरिया तालाब के किनारे हजारों ब्राह्मणो को भोजन कराकर तृप्त कर दिया था। लड्डू का तो पहाण लगा हुआ था। ज्ञानी पुरुष यह जान गये कि ये परमात्मा हैं इनके लिये कुछ भी अशक्य नहीं है। ब्राह्मण भोजन के बाद पूरा सत्संग भोजन करके तृप्त हो गया बाद में महाराज भोजन किया।

•

धर्मकुल की महिमा

– गंगाणी जशुबहन दयालजीभाई

गुलाब की पंखुडी होना है या चन्द्र के बगल में बैठना है तो वैसी योग्यता बनानी पडेगी। गुरु से कंठी बांधने के बाद गुरु की आज्ञा में रहना चाहिये। महाराजने कहा है कि यह धर्मकुल बहुत भोला है। इस धर्मकुल को छलने की कोशिष मत करना। लेकिन अक्षरधाम में जाना हो तो गुरु की आज्ञा में रहकर सत्संग करना होगा। महाराजने वचनामृत में कहा है कि जो धर्मकुल के आश्रित होगा और मेरी भजन भक्ति करेगा मैं उसे अक्षरधाम में ले जाउँगा। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो संसार सागर में घूमते रहेंगे। इस संसार सागर का कोई अन्त नहीं है, भटकना ही रहजायेगा। एक वार तो यह अवसर मिला है उसे जाने नहीं देना चाहिये। इसलिये धर्मकुल के आश्रित तथा गुरु की आज्ञा में रहकर जीवन जीना चाहिये, इसी में परम शान्ति है। धर्मकुल के आश्रित तथा भगवान श्री नरनारायणदेव के आश्रित रहकर भजन भक्ति करना श्रेष्ठ है। अन्यथा अन्यत्र भटकने जैसी वात है। अक्षरधाम की प्राप्ति के सन्दर्भ में लिखा है कि प्रधानपुरुष के लोक से ऊपर वैकुंठधाम है। उससे बार योजन ऊपर गोलोकधाम है। गोलोक धाम से ऊपर सात योजन दूर अक्षरधाम है। वही पर भगवान स्वामिनारायण का वास है। वहाँ पर दर्शन के लिये सभी धामो के देव प्रतिदिन जाते है। उन्हें दर्शन के लिये रोका जाता है तो हमलोगो की क्या बात है। यदि धर्मकुल की आज्ञा का पालन करेंगे तो निश्चित आपको कोई द्वारपाल नहीं रोकेगा और आप उस दिव्यधाम के अधिकारी होंगे। इसलिये श्री नरनारायणदेव के आश्रित होकर धर्मकुल की आज्ञा में रहकर भजन भक्ति कर लेनी चाहिये।

•

सत्संग से नारायण की प्राप्ति होती है

– पटेल लाभुबहन मनुभाई (कुंडाल)

मानव जीवन में सत्संग की महिमा बहुत है। सत्संग करने वाले का तथा कराने वाले का जीवन धन्य बनता है।

एक बार नारदजी हाथ में वीणा लेकर बजाते हुये प्रभु गुणगान करते हुये हिमलाय में महादेवजी के पास पहुंचे । वहाँ जाकर महादेव से कहने लगे प्रभु ! सत्संग की क्या महिमा है । उन्होंने इस उत्तर के समाधान हेतु मृत्युलोक में भेंजा और कहा कि वहाँ जाकर एक कीडे से प्रश्न पूछना - उससे आपके प्रश्न का उत्तर मिल जायेगा । नारदजी मृत्यु लोक में जाकर एक कीडे से प्रश्न पूछते है, प्रश्न पूछते ही वह कीडा मरजाता है । यह देखकर नारदजी आश्चर्य में पड़ गये । पुनः महादेव के पास गये । सम्पूर्ण विगत कह सुनाते है । महादेवने अब बछड़े से प्रश्न पूछने को कहा । वे बछड़े से प्रश्न पूछते है और वह भी मरजाता है । महादेव के पास जाकर यह वात बताते है । महादेवने इसबार कहा कि नवजात शिशु से यह प्रश्न कीजियेगा ।

वे वहाँ से मृत्युलोक में आते हैं और नवजात शिशु से वही प्रश्न करते हैं । बालक से नारदजीने सत्संग की महिमा के विषय में ज्यों ही प्रश्न किया वह नवजात शिशु हंसने लगा । उसने कहा कि आप हमारे मुक्ति दाता है । आपने जिस कीडे से या बछडे से प्रश्न पूछा था वह मैं ही हूँ । इस बार मेरा जन्म मनुष्यबालक के रुप में हुआ है । आपके सत्संग से मेरे पूर्व के सभी पाप नष्ट होगये । सत्संग के प्रताप से ही मेरा मानव जन्म हुआ है । अब मैं बड़ा होकर सत्संगी होकर जीवो का उद्धार करुंगा । इस तरह सत्संग के प्रभाव का ख्याल आते ही नारदजी को उनका उत्तर मिल गया । अब वे करतल में वीणा बजाते नारायण नाम स्मरण करते वहाँ से परिभ्रमण करने निकल पड़े । सत्संग से नारायण की प्राप्ति होती है । यही इस कथा का सार है ।

अनु. पेईज नं. १५ से आगे

को भोजन कराकर भोजन करुँ, जीवन भर उन्हीं के वचन में रहू, लेकिन ध्यान तो आपका ही करेंगे । मुक्तानंदजी का नहीं । आप भी यहाँ से चले जाइये । आप भी हमसे विमुख हो जाइये । महाराज ! शरीरसे आप विमुख कर सकते हैं लेकिन आत्मा तो आपके चिन्तन में लगा रहेगा । वह संत भी दूर वट वृक्ष के नीचे जाकर बैठ गये । यह प्रकरण बद नहीं हुआ चलता रहा । महाराज अभी भी सांत नही हुए । तीसरे संत को कहे वे भी नहीं माने । चौथे को कहे वे भी नहीं माने । विमुख की संख्या बढने लगी । साठ संत महाराज के पास बैठे थे । वे सभी विमुख होने को तैयार हो गये ।

साठ संतो की जगह बदल गयी और दूर जाकर वट वृक्ष के नीचे बैठ गये । यहाँ पर केवल महाराज तथा मुक्तानंद स्वामी दो ही रह गये । उपरोक्त बातों से यह स्पष्ट होता है कि युद्ध तथा खेल में कुछे निश्चित नहीं होता । कौन जीतेगा - कौन हारेगा । श्रीज महाराजने मुक्तानंद स्वामी से कहा कि, स्वामी, ये सभी लोग चले गये । अब क्या करेंगे ? मुक्तानंद स्वामीने कहा, कि तो चलिये महाराज हम लोग भी उनके साथ मिल जाते हैं ।

''ध्यान धर ध्यान धर धर्म ना पुत्रनुं''

श्रीहरि इस वात को स्वयं स्वीकार करके संतो के पास चल दिये । संतो से कहे कि आप लोग जीते हम हारे । आज आप लोग हमारी कसौटी में से सफलता पूर्वक उत्तीर्ण हो गये ।

संत प्रसन्न हो गये । स्वामिनारायण भगवान की जय । सहजानंद महाराज की दूसरी घटना । यह घटना जीवन में कभी भूलने लायक नहीं है । संत विमुख होने के लिये तैयार हैं परंतु महाराज के सिवाय अन्य का ध्यान करने के लिये तैयार नहीं है । इस वात का सार अवश्य चिन्तन करने योग्य है ।

''सो लांघन करी मरी जाय रे विचार जो ।
तोय केसरी घास न खाय रे सहेली ॥

भलें सौ उपवास हो, भूख से मरजाय तो भी सिंह कभी घास नहीं खायेगा । इसी तरह सच्चा सहजानंदी सिंह भजन-भक्ति-उपासना-ध्यान तो मात्र अपने इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान की ही करेगा ।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में दीपोत्सव का उत्सव मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के पवित्र सानिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से तथा पू. महंत स.गु.शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा कोठारी पार्षद दिगंबर भगत की प्रेरणा मार्गदर्शन से दीपोत्सव कं समग्र कार्यक्रम धूमधाम से मनाया गया।

ता. १२-११-२०१२ सोमवार को काली चर्तुर्दशी के निमित पर श्री हनुमानजी का पूजन अर्चन साम को ६-३० बजे प.पू. भावि आछार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथो से विधिपूर्वक किया। हनुमानजी महाराजने धर्मकुल के कुल देवता है। दोनो पुजारी पार्षद बाबु भगत तथा पार्षद महादेव भगतने सुंदर सजावट की।

ता. १३-११-१२ दिवाली के शुभदिन साम ६-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से समूह शारदापूजन मंदिर के उपरोहित द्वारा पूजन विधिविधिपूर्वक की गई। जिस में हजारो व्यापारी हरिभक्तोने भारतीय संस्कृति की परंपरा को निभाते हुए आज के आधुनिक टेकनिकल युग में भी चोपडा पूजन की प्रथा वर्तमान में भी यथावत है। २ घंटे तक संस्कृत के श्लोको के गान के साथ पूजन अविरत चालू रहा। प.पू. आचार्य महाराजश्रीने समस्त पूजन में लाभ लेने वाले हरिभक्तों को नये वर्ष के आशीर्वाद के साथ उनकी व्यापार में उत्तरोत्तर प्रगति के लिए आशीर्वाद दिये।

ता. १४-११-१२ बुधवार संवत २०६९ नये वर्ष के सुमंगल प्रभात को ५-०० बजे श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती ६-३० बडे शिंगार आरती तथा १२-०० बजे अन्नकूट आरती श्रीहरि के ६ट्ठे ७ वे तथा ८ वे वंशज के वरद् हाथो से की गई। जिसमें दर्शन हरिभक्तों को साम को ५-०० बजे तक हुआ। समग्र दीपोत्सव प्रसंग में कोठारी पारषद दिगंबर भगत की प्रेरणा-मार्दर्शन से स.गु. स्वामी हरिचरणधासजी, ब्र. पू. राजेश्वरानंदजी, जे.पी. स्वामी, भंडारी स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी, कोठारी जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, पुराणी स्वा. विश्वविहारीदासजी, नटु स्वामी, भक्ति स्वामी, तथा राम स्वामी, चेतन भगत तथा हरिभक्तों ने अथक परिश्रम की। (शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद मे रंगमहोल श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव एवं वनविचरण पंचान्ह पारायण की गई

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शा.स्वा. हरिजीवनदासजी तथा ब्र. पू. राजेश्वरानंदजी की प्रेरणा से प.भ. करशनभाई मनजीभाई हिराणी ध.प. अमरबाई, पुत्र कल्याणभाई, रवजीभाई, लालजीभाई प्रेमजीभाई आदि हिराणी परिवार (रामपर वेकरा (कच्छ) गांधीधाम) तरफ से ता. २३-११-१२ से २७-११-१२ तक श्रीहरि वनविचरण पंचान्ह पारायण स.गु. पुराणी स्वामी विश्वविहारीदासजी गुरु स.गु.शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (महंतश्री अहमदाबाद) के वक्तापद पर हुई। यजमान परिवार के ४० जितने भाईओ तथा बहनोने तथा स्थानिक हरिभक्तोंने कथा श्रवण करके धन्य हुए थे। समग्र प्रसंग में कोठारी पार्षद दिगंबर भगत, जे.पी. स्वामी, कोठारी जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, नटु स्वामी आदि संत मंडलने सुदंर सेवा की।

सहिंता पाठ मे स.गु. पुराणी स्वामी धर्मजीवनदासजी बिराजे थे। सभा संचालन शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजीने किया था।

रंगमहोल श्री घनश्याम महाराज का १२७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

कार्तिक शुक्लपक्ष-१२ को ता. २५-११-१२ रविवार को ६-३० से ७-०० बजे प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ हाथों से रंगमहोल में विराजमान इष्टदेव सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज का १२७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव अभिषेक षोडशोपचार विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ।

स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा पू. ब्र.स्वा. राजेश्वरानंदजी की प्रेरणा से प्रसंग के यजमान प.भ. करशनभाई मनजीभाई हिराणी परिवार (रामपर-वेकरा) - वर्तमान गांधीधाम-कच्छ)ने महालाभ लेकर प.पू. लालजी

महाराजश्री के आशीर्वाद प्राप्त करके धन्यता का लाभ लिया । इस प्रसंग में जे.पी. स्वामी तथा पुजारी राम स्वामीने सुंदर सेवा की । (शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी, प.भ. कल्याणभाई हिराणी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में शरदोत्सव मनाया गया ।

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा नारायणघाट मंदिर के महंत स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल नारायणघाट के सभी हरिभक्तों के साथ सहकार से ता. २८-१०-१२ के रविवार को नारणघाट मंदिर में बिराजमान श्री घनश्याम महाराज के सानिध्य में हजारो हरिभक्तों ने शरदोत्सव मे रास खेला । इस प्रसंग में मुख्य यजमान प.भ. दशरथभाई अंबालालभाई पटेल ह. संजय तथा पूरव (चांदखेडा) थे । कलाकार पूरव पटेल तथा मयंक मोदीने रास-गरबा गाकर सभी को आनंदित किया था । संतो तथा भक्तोने बडी संख्या में भाग लिया था ।

रास गरबा में श्रेष्ठ ३ भक्तों को पू. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी के हाथों से सन्मान किया गया । अंत में समूह आरती तथा दुधपौंवा का प्रसाद दिया था । समग्र उत्सव में बालु स्वामी, अभय स्वामी, व्रज स्वामी, भानु स्वामी तथा दिव्यप्रकाश स्वामी तथा युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी । (शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

ईश्वरपुरा (बदपुरा) गांव में त्रिदिनात्मक भक्त आख्यान पारायण किया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु.स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारायणघाट मंदिर महंतश्री) की प्रेरणा से ईश्वरपुरा के प.भ. अभुभाई मोवतभाई चौधरी तता नाथीबहन अभुभाई के शुभ संकल्प से उनके पुत्र भरतभाई चौधरी की तरफ से श्रीहरि की प्रसन्नता हेतु ता. ९-११-१२ से ता. ११-११-१२ तक त्रिदिनात्मक भक्त आख्यान कथा स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णादासजी (कोटेश्वर गुरुकुळ) के वक्तापद पर संगीत के साथ की गई ।

पूर्णाहुति प्रसंग पर ता. ११-१-१२ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । प्रासंगिक सभा में महंत स.गु.शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, शा.पी.पी. स्वामी आदि संतोने अपनी भावना व्यक्त करके यजमान परिवार की सेवा की प्रशंसा की । अन्य संतो में स.गु. भंडारी स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी, को. स्वा. राजेश्वरानंदजीस स.गु. स्वामी जयप्रकाशदासजी, शा.स्वा. अभयप्रकाशदाजी, शा. व्रजभूषणदासजी, शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी तथा स्वा. माधवप्रियदासजी भी पधारे थे ।

सभा संचालक स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वुरदसजीने किया था । (कोठारीश्री बदपुरा)

एप्रोच (बापुनगर) मंदिर में शरदोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से मंदिर के बाहर रोड पर हरिभक्तोंने ठाकुरजी की मूर्ति का विसर्जन करके नंद संतो द्वारा रचित कीर्तनो के साथ रास खेलकर शरदोत्सव मनाया ।

अहमदाबाद मंदिर से गवैया संत स्वा. हरिजीवनदासजी तथा बलदेव स्वामीने सुंदर कीर्तन का गान किया । अंत में दूधपौवा का प्रसाद दिया गया ।

हर्षद कोलोनी मंदिर में प.भ. दासभाई की प्रेरणा से शरदोत्सव मनाया गया । ता. २०-१०-१२ को सुहर श्री स्वामिनारायण म्युजियम के मौन मंदिर में श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप बड़ी गादीवालाश्री के शुभ निश्रा में हर्षद कोलोनी मंदिर की बहनोने महापूजा करके श्री नरनारायणदेव का अभिषेक का लाभ लिया । इस प्रसंग में प.पू. बड़े महाराजश्रीने पधारकर श्री नरनारायणदेव की आरती की ।

एप्रोच मंदिर से टोरड़ा मंदिर देव के दर्शन हेतु पदयात्रा

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा मंदिर के महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनादसजी की प्रेरणा से तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल बापुनगर के आयौजन से ता. १६-११-१२ को प्रात:बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज

का दर्शन करके १६० जिसने हरिभक्तोंने टोरडा गाँव में पदयात्रा की प्रांतिज तथा हिंमतनगर मंदिर दर्शन करके ता. १९-११-१२ को टोरडाा श्री गोपाल लालजी के दर्शन किये थे। (गोरधनभाई सीतापरा)

ट्रेन्ट गाँव के आंगन में जीवत चर्या पर प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा जेदलपुर गाँव के स.गु. महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी की शुभ प्रेरणा से ट्रेन्ट गाँव में ता. २०-११-१२ के दिन गं.स्व. रुक्ष्मणीबहन मणीलालभाई पटेल की जीवन चर्या प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री संत मंडल के साथ आशीर्वाद देने पधारे थे । समस्त रुक्ष्मणीबाई के परिवार तथा ग्रामजनो द्वारा प.पू. बड़े महाराजश्री की भव्य शोभायात्रा द्वारा स्वागत किया गया । उसके बाद प.पू. बड़े महाराजश्रीने यजमान परिवार को दिव्य आशीर्वाद दिये । संतो तथा मेहमान हरिभक्तोने प्रसाद ग्रहण किया ।

(शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी)

देलवाड़ा गाँव में जीवितचर्या प्रसंग का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा जेतलपुर के पु.स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से गाँव के प.भ. कांतिभाई तथा उनकी धर्मपत्नी पुष्पाबहन का जीवन अमृतपर्व प्रसंग ता. १७-११-१२ को रखा गया । उसके बाद प्रासंगिक सभा में यजमान परिवार के सुपुत्र श्री विजयभाई श्री भरतभाई आदि परिवारने प.पू. बड़े महाराजश्री के का पूजन, अर्चन आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किये । सभा में स.गु. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा शा. घनश्याम स्वामीने उद्‌बोधन किया था । अंत में प.पू. बड़े महाजश्रीने यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये ।

(शा. भक्तिनंदनदासजी)

नडियाद में कच्छी हरिभक्तो के वहाँ प.पू. बड़े महाराजश्रीने पधरामणी की

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर गाँव के महंत स्वामी स.गु.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू.स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की शुभ प्रेरणा से मूल दोलत पर (कच्छ) के वतनी वर्तमान नडीयाद वासी प.भ. कानजीभाई हिरजीभाई वेलाणी के नये निवास स्थान में ता. २३-११-१२ को उनके आग्रहपूर्वक आमंत्रण का सम्मान करते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । ५० जितने वाईक सवारो के साथ शोभायात्रा निकाल कर प.पू. बड़े महाराजश्री का भव्य स्वागत किया गया । उनके नूतन निवास में यज्ञ में श्रीफल का होम करके यज्ञ की पूर्णाहुति की । यजमान परिवार ने प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आरती उतारी । यजमानश्री के पुत्र, रजनीकांत तथा रोनकभाईने संतो का पूजन किया था । प्रासंगिक सभा में पू.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदाजी तथा वयोवृद्ध संत शा.स्वा. भक्तिवल्लभदासजीने सुदंर उद्‌बोधन किया ।

(शा. भक्तिनंदनदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी तथा महंत स्वामी आनंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से पवित्र श्राद्धपक्ष में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा भिन्न-भिन्न हरिभक्तों के आवास में धून-भजन कथा-वार्ता का सुंदर आयोजन किया गया । जिस में शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदास, मुक्तस्वरुपदास हरिप्रसाद स्वामी तथा पूर्व महंत भानुप्रसाददासजी आदि संतोने भी कथा-वार्ता का लाभ दिया ।

कांकरिया मंदिर में श्रीहरि महिला मंडल द्वारा धून-भजन का आयोजन

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्रीहरि महिला मंडल द्वारा श्राध्धपक्ष में मंदिर में सभी बहनो ने समूह में दोपहर ३-३० से ५-३० तक कीर्तन-भक्ति आदि का आयोजन किया ।

कांकरिया में शरदोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी तथा महंत स्वा. आनंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से आश्विन शुक्ल पक्ष-१५ शरद पूर्णिमा को श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा महिला मंडलने मिलकर रास-गरबा किया । सभी को दूध-पौवा का प्रसाद दिया गया

।इस प्रसंग में नरोत्तम भगत तथा नीरुभाई आदिने सुंदर सेवा की।(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, कांकरिया, गौरांगभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर डेमाई

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल डेमाई के संपूर्ण प्रयास से शरद पूर्णिमा को शरदोत्सव का आयोजन किया गया। इस प्रसंग पर अहमदाबाद से शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी (हरिद्वार), शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी, स्वा. विष्णुप्रसाददासजी, स्वा. सुखनंदनदास तथा स्वामी माधवप्रसाददासजी आदि संत मंडल तथा श्री नरनाराणदे वुक ंडल, गाँव के हरिभक्तोंने रासोत्तसव के साथ महाआरती तथा प्रसाद का आयोजन किया। (कोठारीश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत शा.स्वा. घनश्यामप्रकादासजी की प्रेरणा से नूतन वर्ष को ठाकुरजी के समक्ष अन्नकूट का भोग लगाया गया। अन्नकूट के यजमान शेठजी नारणभाई तथा बालवा के चौधरी अल्केशभाई तथा नारणभाई माणसा के तथा आसपास के हरिभक्तो ने सुंदर सेवा की। पुजारी भक्ति स्वामी आदि संत मंडलने सुंदर सेवा की। (गवैया चंद्रप्रकाशदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नांदोल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर नांदोल में ठाकुरजी के समक्ष नूतन वर्ष के दिन अन्नकूटोत्सव मनाया गया । श्री नंदुभाई तथा जीतुभाईने यजमानपद का लाभ लिया । मंदिर को सुंदर रोशनी से सजाया गया। (कोठारी विष्णुभाई)

आमजा में तीसरी सत्संग सभा का आयोजन किया गया

सर्वोपरि श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से प्रसादीभूत आमजा गाँव में ता. ३-१०-१२ को तीसरी दिव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया। जिस में बालवा, विसनगर, नादरी, चांदीसणा, रामपुरा, प्रतापपुरा, लिंबोदरा, तथा माणेकपुर गाँव के हरिभक्तोंने लाभ लिया। इस प्रसंग पर जेतलपुर से स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी संत मंडल के साथ पधारे थे । शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी (कांकरिया) साधु मुक्तस्वरुपदासजी (मूली) तथा बालवा, आमजा गाँव के हरिभक्तोंने सभा का आयोजन किया । इस प्रसंग पर जेतलपुर से शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी, शा.हरिप्रसाददासजी तथा माणसा के संतगण पधारे थे । बालवा तथा विसनगर के भक्तजनोने धून-कीर्तन का आनंद लिया। विसनगर से पधारे प.भ. उदयनभाई महाराजाने सभा संबोधन किया था। (श्री न.ना.देव युवक मंडल, बालवा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धरियावाद (राज.)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद, महंत ब्र.स्वा. वासुदेवानंदजी की प्रेरणा से धरियावद मे नूतन वर्ष को भव्य अन्नकूट का भोग ठाकुरजी को लगाया गया था इसके साथ धून, भजन, कीर्तन कथा आदि हरिभक्तोने की । वहाँ के दैनिक भास्कर ने इस प्रसंग का सुंदर कवरेज किया।

(कोठारीश्री)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर रतनपर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वा. नरनारायणदासजी की प्रऱणा से विजया दशमी को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४० वाँ प्राकट्योत्सव धूमधाम से हरिभक्तोंने मनाया। शरदोत्सव पर धून-भजन, कीर्तन रासोत्सव का आयोजन किया गया । कालु भगतने सुंदर आयोजन किया। (वी.आर. पटेल)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर डिट्रोईट

सर्वोपरि श्रीजी महाराजकी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से मंदिर के महंत स्वामी योगीचरणदासजी, पुजारी सर्वेश्वरदासजी की प्ररणा से आई.एस.एस.ओ. श्री स्वामिनारायण मंदिर डिट्रोईट में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ४० वाँ प्राकट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया। प्रेसिडेन्ट डॉ. अरविंदभाई पटेल

तथा सभी हरिभक्तोंने सुदंर सेवा का लाभ दिया । नवरात्री शरदोत्सव तथा दिपावली को धनतेरस, लक्ष्मीपूजन, काली चौदश पूजन का भी आयोजन किया गया । नये वर्ष में तुलसी विवाह का भी सुंदर आयोजन किया गया । वेबसाईट पर उत्सव के सुंदर दर्शन करवाये गये । (रिंकु पटेल)

वोशिंग्टन डी.सी. आई.एस.एस.ओ. चेप्टर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर में अक्टूबर महीने में ६, १३, २० तथा २७ तारीख को शनिवार को सत्संग सभा हुई । ११ तथा २५ को एकादशी के उपलक्ष में सत्संग किया गया । सभा में धून-भजन कीर्तन, शिक्षापत्री जनमंगल नामावलि, भोग, आरती तथा नित्य नियम किया गया । १९ तथा २० तारीख को कोलोनिया से डी.के. स्वामी ने कथावार्ता का लाभ प्रदान किया । संप्रदाय की मर्यादनुसार रास-गरबा का आयोजन किया गया । २० को समूह मपापूजा हुई । उसके बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४० वाँ प्राकट्योत्सव तथा गादी अभिषेक उत्सव केक काटकर मनाया गया । स्वामीने इस प्रसंग पर धर्मकुल का महात्म्य समजाया । प्रत्येक हरिभक्तो को अहमदबाद मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४० वें जन्मदिन प्रसंग का वीडियो लेपटोप से स्केन पर दिखाया गया । (कनुभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से शिकागो में सत्संग प्रतिदिन वृद्धि प्राप्त कर रहा है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४० वाँ प्राकट्योत्सव श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सभ्योंने केक काटकर मनाया ।

काली चौदश के दिन श्री हनुमानजी का पूजन, नूतन वर्ष १३ नवेम्बर को ठाकुरजी के समक्ष मंगला आरती से शयन आरती तक दर्शन, भजन, कीर्तन तथा अन्नकूट आदि का आयोजन किया गया । प्रमुखश्री जगदीशभाई पटेलने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को नूतन वर्ष का आशीर्वाद पत्र सभा में पढ़कर सुनाया । स्वामी निलकंठप्रसाददासजी तथा स्वा. शांतिप्रकाशदासजीने धर्मकुल का माहात्म्य कहा । महाप्रसाद का आयोजन किया गया । (वसंत त्रिवेदी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया में प.पू. महाराजश्री का ४० वाँ प्राकट्योत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया में २८ अक्तूबर शनिवार को साम ५ से ८ तक महंत स्वामी ज्ञानप्रकाशदासजी तथा धर्मकिशोरदासजी की उपस्थिति में हजारो हरिभक्तोंने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४० वाँ जन्मदिन धूमधाम से मनाया । शा. धर्मकिशोरदासजीने धर्मकुल की महिमा समझाया सभा में प.पू. महाराजश्री की तसवीर का पूजन अर्चन संतो तथा हरिभ्कतोने किया । छोटे बालकोने केक काट करके जन्मोत्सव मनाया । (प्रविण शाह)

न्युयोर्क में प.पू. महाराजश्री का ४० वाँ प्राकट्योत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव संचालित श्री स्वामिनारायण मंदिर न्युयोर्क चेप्टर द्वारा ट्राईस्टेट में से सभी हरिभक्तों ने मिलकर न्युयोर्क के हिन्दु मंदिर में कोम्युनिटी सेन्टर में शा.स्वा. धर्मकिशोरदासजी तथा हजारो हरिभक्तोने साथ मिलकर प.पू. महाराजश्री का ४० वाँ प्राकट्योत्सव अवसर पर धुन, भजन, कीर्तन करके बच्चोंने केक काटकर मनाया . स्वामीने .पू. महाराजश्री की अनेक सत्संग प्रवृत्ति के विषय में सभी को उद्‌बोधन करके धर्मकुल माहात्मय बताया। (शाह प्रविणभाई)

नोर्थ केरोलीयन में प.पू. महाराजश्री का ४० वें प्राकट्योत्सव प्रसंग पर सत्संग सभा का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से नोर्थ केरोलीन में कोम्युनिटी सेन्टर होल में २१ अक्टूबर विजया दशमी को प.पू. महाराजश्री का ४० वाँ प्राकट्योत्सव शा. धर्मकिशोरदाजी की उपस्थिति में मनाया गया ।

स्वामीने सुंदर कथा में धर्मवंशी का माहाताम्य कहा । इस प्रसंग में कीर्तिकांतभाई, विष्णुभाई, सुहासभाई, निलेशभाई, आशिषभाई तथा केतनभाईने यजमान पद का लाभ लिया । प.पू. महाराजश्री की तसवीर का पूजन करके बच्चोंने केक काटकर प्राकट्योत्सव धूमधाम से मनाया ।

(केतनभाई)

मूली श्री राधाकृष्णदेव देश के हरिमंदिर के हरिभक्तों में दान भेंट करने के विशय में

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आदेश से मूली श्री राधाकृष्णदेव के हरि मंदिर सत्संगी तथा कोठारीश्री तथा गाँव के आगेवान हरिभक्तों को जानकारी प्रदान की जा रही है कि इ.स. २००१ में विनाशक भूकंप में हमारे मूली की प्रजा के जान-माल के साथ कई मंदिर क्षतिग्रस्त हुए तो कई गिर गये थे । उस समय प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मूली मंदिर से सहायता की थी । कई मंदिरो के संतो-महंतो को एक-एक गाँव के मंदिर तैयार करवाने की पू. महाराजश्रीने आज्ञा की थी । जरुरत अनुसार कुछ समय के लिए गाँव के दान भेंट का उपयोग मंदिर बनाने में करने के लिए अनुमति प्रदान की । इस प्रकार मंदिर भी त्वरित निर्माण हो तथा हरिभक्तों को भजन भक्ति का सुख मिले । संतो-महंतोने आज्ञानुसार मंदिर तैयार करवाकर तथा प.पू.आचार्य महाराजश्री द्वारा प्राण प्रतिष्ठा करवाकर मंदिरो के दस्तावेज जमा करवाये । परंतु आज इतने समयबाद कुछ मंदिरो का निर्माण कार्य बाधित है । तो उसी गाँव के रहनेवाले हरिभक्तों को आज्ञा के साथ जानकारी दी जाती है कि अपने हिस्से दान द्रव्य, धन-अनाज मूली मंदिर श्री राधाकृष्णदेव के कोठार के (चोपड़े) में जमा करवाकर उसकी पक्की रसीद प्राप्त कर ले ।

श्रीहरिने शिक्षापत्री श्लोक १४७ में आज्ञा की है कि, गृहस्थाश्रमी सत्संगी को अपनी वृत्ति तथा उद्यम से जो भी धन-धान्यादि प्राप्त किया हो उसका दशवां भाग नीकालकर श्रीकृष्ण भगवान को अर्पण करना चाहिए । जो व्यवहार से दुर्बल हो उन्हें बीसवा भाग अर्पण करना चाहिए । दान देने वाले धन कोई सामाजीक कार्य का अन्य किसी भी कार्य में उपयोग नहीं करना चाहिए । वह हिस्सा देव का माना गया है । ठाकुरजी प्रत्येक क्षण हमारी रक्षा करते हैं ।

इसी लिए प्यारे हरिभक्तों से अनुरोधहै कि मूली श्री राधाकृष्ण मंदिर में प्रदान करते हो तो अब से भी जमा करवाकर उसकी पक्की रसीद कोठार से प्राप्त करे ।

मूली निवासी श्री राधाकृष्णदेव तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आप सभी पर प्रसन्न रहे तथा सभी की उत्तरोत्तर प्रगति हो ऐसी प्रार्थना ।

(महंत स्वामी, श्री स्वामिनारायण मंदिर, मूली)

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

अहमदाबाद : प.भ. ओधवजीभाई की धर्मपत्नी कमलाबहन ओधवजीभाई पटेल ता. २८-१०-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

धोलका : श्री नरनारायणदेव के अनन्य निष्ठावान प.भ. नटुभाई जगजीवनदास सोनी ता. ३-११-१२ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

बलोल-भाल : प.भ. देवभाई (भुरुभा) ओधडथा चावड़ा की धर्मपत्नी रंभाबहन ता. १०-११-१२ शनिवार को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

बावला : दिपककुमार नटवरलाल प्रजापति श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

अहमदाबाद-मेधाणीनगर : बालसभा के संचालक प.भ. दयालजीभाई जेठाभाई की धर्मपत्नी कडवीबहन ता. २२-१०-१२ को श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुई ।

मूली : श्री राधाकृष्णदेव की ५० वर्ष से खेतीकाम में सेवा करने वाले प.भ. परमार जीलुभा नारायण संगजी ता. ३१-१०-१२ को श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

चांदरवेडा : प.भ. कांतिभाई सोमाभाई चौहाण ता. ५-८-१२ को श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

पलाणा (जि. गांधीनगर) : प.भ. हरेशभाई के पिताश्री प.भ. जसभाई हरिभाई पटेल (उ. ८२ वर्ष) ता. २६-९-१२ को श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

लुणावाडा : श्री स्वामिनारायण मंदिर के कोठारी प.भ. कंचनलाल मणीलाल काछीया ता. १५-११-१२ को श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।